लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला - 30

आधुनिक संस्कृत काव्य की परिक्रमा

मञ्जुलता शर्मा

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः
नवदेहली

लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला - 30

आधुनिक संस्कृत काव्य की परिक्रमा

लेखिका
डॉ. मञ्जुलता शर्मा

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
मानितविश्वविद्यालयः
(भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनम्)
नवदेहली

नमोवाक्

मानव मन की अदम्य अनुभूतियों की सुन्दर शब्दमयी अभिव्यक्ति ही काव्य है। शब्दों द्वारा हृदयों को परस्पर जोड़ने वाली यह कला निस्संदेह अनुपमेय है। अनुपम सहोदर काव्य न केवल विज्ञ जनों को आनन्दित करता है अपितु निर्गुणी श्रोताओं को भी आस्वादमय सन्तोष की अनुभूति कराता है। आधुनिक युग में एक ओर तो संस्कृत काव्य प्राचीन रचना परिपाटी का अनुसरण कर रहा है तो दूसरी ओर कवियों की रचनाधर्मिता ने अपने को युगानुरूप साबित करने के लिये उस पारम्परिक सीमारेखा से इतर अपना स्थान बनाया है। भारतीय चिन्तन में काव्य और कला को जीवन की कलात्मक अभिव्यक्ति स्वीकार करते हुये कान्तासम्मित उपदेश प्रदायिनी कहा गया है।

काव्य के प्रतिमान समय के साथ बदलते रहते हैं। बदलती अभिरुचि, बदलते युग और साहित्य के कारण साहित्य में भी परिवर्तन अपेक्षित है। काव्य उदात्त भावानुभूति अथवा रसानुभूति का माध्यम है, इस कारण काव्य में बौद्धिक प्रवृत्ति के साथ–साथ रागात्मक अनुभूति पक्ष भी बना रहता है। क्योंकि काव्यशास्त्र का कोई भी प्रतिमान शाश्वत नहीं होता, परम्परागत नियमों में परिवर्तन होता रहता है अतः यह उसकी जीवन्तता का प्रतीक है। वास्तव में काव्य एक ऐसी कला है जो श्रवणेन्द्रिय द्वारा मानसिक तृप्ति कराती है। उसका कोई स्थूल आधार नहीं होता। केवल शब्द और अर्थ के पारस्परिक संयोग से यह कवि और भावक के मध्य सेतु के रूप में प्रतिष्ठित होती है। इस तथ्य से यह बात तो निश्चित तौर पर सामने आती है कि काव्य युग की आवश्यकता और मानव की मनोवृत्ति से सृजित होता है। परन्तु इसके लिये यह आवश्यक है कि काव्य जीवन की प्रचारात्मक अभिव्यक्ति न होकर यथार्थ अभिव्यक्ति बने। जीवन से कटकर लिखे गये साहित्य का कोई मूल्य नहीं होता। साहित्यकार जब अपनी प्रतिभा, कल्पना, सौन्दर्य चेतना और समाज की आवश्यकता के विनियोग से जीवन को रूपायित करता है तब काव्य की अभिव्यक्ति अधिक हृदयग्राही होती है।

विषयानुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

प्रथम अध्याय – साम्प्रतिक संस्कृत काव्य और उसके आधुनिक संदर्भ (1–23)

(क) संस्कृत में आधुनिकता का प्रारम्भ

(ख) आधुनिकता के लक्षण

(ग) विषयनावीन्य

(घ) ग्राह्य और अग्राह्य के मध्य सीमा रेखा का अभाव

द्वितीय अध्याय – विभिन्नवाद एवं आधुनिक कविताओं पर उनका प्रभाव (24–83)

- साम्यवाद
- सामाजिक वास्तववाद
- अस्तित्ववाद
- राष्ट्रवाद
- रहस्यवाद
- विदेशजवाद
- स्वच्छन्दतावाद
- मनोविश्लेषणवाद
- अभिव्यक्तिवाद
- प्रभाववाद
- घनवाद
- प्रयोगवाद एवं प्रगतिवाद
- आकारवाद
- नारीवाद
- शाश्वततावाद
- जनवाद

तृतीय अध्याय – आधुनिक कविता में परिवर्तन (84–126)

(1) *बहिरंग परिवर्तन*

- टाइपोग्राफी
- संदिग्धता
- शिल्पकला एवं चित्रकाव्य
- नाट्यप्रगीतकविता

आधुनिक कवियों ने उन विषयों को अपनी लेखनी का विषय बनाया है जो अब तक अनपेक्षित रहे। तुच्छ से तुच्छ विषय पर लिखने वाले बनमाली बिश्वाल **'घासपुष्पम्'** में अपने मन की व्यथा कह जाते हैं–

दलितं प्रपीडितं, निष्पेषितम्
अहं घासपुष्पम्।
घासे मम जन्म, स्थितिः/घासे हि विलयः।
पुष्पेष्वहं न परिगणितम्/जीवाम्यहं परं बह्वाशाभिः।

(व्यथा पृष्ठ–2)

'वेलेन्टाइन डे' जैसे आधुनिक विषय एवं प्रसंग पर कवि ने अपनी एक सम्पूर्ण रचना प्रस्तुत की है जिसमें कम्प्यूटर एवं ईमेल के माध्यम से प्रिया के पास सन्देश भेजने की मनोकामना है।

अपने युग की समस्त विसंगतियों में नये क्षितिज की ओर उड़ान भरने वाले हमारे आधुनिक कवियों की रचनाओं में आधुनिक बोध ध्वनित होता है। राधावल्लभ त्रिपाठी की रोटिकालहरी, लहरी काव्यों की परम्परा को एक नया दृष्टिकोण देने में समर्थ है। चूल्हे में फूलती रोटी से बुभुक्षा कैसे जाग्रत होती है और भूखे बालक के नेत्र भी मानो उस रोटी के विस्तार के साथ–साथ उन्मीलित होते हैं।

किलन्नगोधूमचूर्णस्य पिण्डैः समं
वेल्लिता चक्रपट्टे च विस्तारिता ।
ऊष्मणा योजिता वाष्पपूरान्विता
वाष्पपूरं हरन्ती शिशोर्नेत्रजम्।

(रोटिकालहरी)

केशवचन्द्र दाश शिशिर में भीगी घास पर चलते कुत्ते में भी सौन्दर्य की अनुभूति करते हैं। डॉ0 रेवाप्रसाद द्विवेदी का प्रमथः नामक काव्य संग्रह अणुयुग के प्रति सचेत करता है।